

PROF. DIGAMBER HANSDA

Prof. Digamber Hansda is a well known litterateur who has been continuously working for the development of Santali language, literature and traditional culture.

2. Born on October 16, 1939, in a farmer family at village Dovapani, Jamshedpur, Prof. Hansda completed his education in different village schools and pursued Master of Political Science under Ranchi University. He was the founder Professor of L.B.S.M. College, Karandih, Jamshedpur and then became the Principal of the former.

3. Prof. Hansda very closely observed the village life style and common needs of the people during his school life, and then when he was a student of College and University. He is co-operative for the down trodden people. He always thinks for the development of Women Education, Prof. Hansda saw schools without tribal girls in and around Jharkhand. Prof. Hansda with some of his friends started several awareness programmes; he even conducted door to door campaign and the result of which many tribal girls started to go to school. Many people came beside him and started another awareness programme against superstition, fear and stigma about Leprosy in and around Jharkhand under Sangh's Leprosy Control and Welfare Service.

4. Prof. Hansda has several publications to his credit in Santali and other languages like Hindi, Bengali and English. Besides these Prof. Hansda has also written different booklets, books and speeches from time to time which are published in various dailies, weeklies and magazines. Almost all the publications of Prof. Hansda's are studied from primary level to college — university level at different states including Jharkhand.

5. Prof. Hansda is associated with number of social, NGOs and Govt. organisations. Besides these Prof. Hansda is very much active in making bridge between different communities in our society.



प्रो. दिगम्बर हाँसदा

प्रो. दिगम्बर हाँसदा एक ऐसे प्रख्यात साहित्यकार हैं जो सन्थाली भाषा, साहित्य और उनकी परम्परागत संस्कृति का विकास करने के क्षेत्र में अनवरत रूप से कार्य कर रहे हैं।

2. आपका जन्म जमशेदपुर जिला स्थित देवापानी गांव में एक कृषक परिवार में 16 अक्तूबर, 1939 में हुआ था और आपने अलग-अलग ग्रामीण विद्यालयों से अपनी शिक्षा पूरी की और तत्पश्चात रांची विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में परास्नातक की उपाधि प्राप्त की है। आप एल बी एस एम कॉलेज करनडीह, जमशेदपुर के संस्थापक प्रोफेसर रहे हैं और फिर वहां पर ही प्राचार्य के रूप में पदासीन रहे हैं।

3. अपने विद्यालयी जीवन के दौरान और इसके पश्चात जब आप कॉलेज और विद्यालय के छात्र रहे , तब आपने ग्रामीण जीवन शैली और वहां के लोगों की आम जरूरतों को गहराई से देखा। आप अति विपन्न एवं दीन लोगों के प्रति सहयोग का भाव रखते हैं। जब आपने झारखण्ड एवं आस-पास के विद्यालयों में जनजातीय बालिकाओं को पढ़ते हुए नहीं देखा तो आप हमेशा महिला शिक्षा का विकास करने के बारे में सोचने लगें। आपने अपने कुछ मित्रों के साथ मिलकर इस दिशा में अनेक जागरूकता अभियान शुरू किए, यहां तक कि आपने घर-घर जाकर इस अभियान को तेज किया और उसका यह परिणाम हासिल हुआ कि अनेक जनजातीय बालिकाओं ने स्कूल जाना शुरू कर दिया। अनेक लोग उनके साथ जुड़ गए और सबने मिलकर संघ के कुष्ठ नियंत्रण एवं कल्याण सेवा कार्यक्रम के तहत झारखंड एवं आस-पास के क्षेत्रों में कुष्ठ के बारे में फैले अंध विश्वास, भय और कलंक के विरूद्ध दूसरा जारूकता कार्यक्रम शुरू किया।

4. आपको संथाली और हिन्दी, बंगाली एवं अंग्रेजी जैसी अन्य भाषाओं में अनेक प्रकाशन निकालने का गौरव प्राप्त है। इसके साथ-साथ, आपने समय-समय पर अलग-अलग प्रकार की पत्रिकाएं, किताबें और भाषण भी लिखे हैं जिन्हें विभिन्न दैनिक, साप्ताहिक पत्रों एवं मैगजीनों में प्रकाशित किया गया है। आपके सभी प्रकाशनों को झारखण्ड सहित अनेक राज्यों में प्राथमिक स्तर से लेकर कॉलेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाया जाता है।

5. आप अनेक सामाजिक, एन जी ओ और सरकारी संगठनों के साथ जुड़े रहे हैं। इनके अलावा आपने हमारे समाज के विभिन्न समुदायों के बीच सेतु का कार्य किया है।